Meaning & Scope of Economic Geography

भूगोल विज्ञान के अन्तर्गत पृथ्वी के धरातल पर पाये जाने वाले भौतिक तथा मानवीय तत्वों का अध्ययन किया जाता है इन दोनों तत्वों के आधार पर भूगोल को दो भागों में बांटा गया है। इसके बाद भौतिक और मानव भूगोल की भी अनेक उपशाखाएं में विभक्त किया गया है।

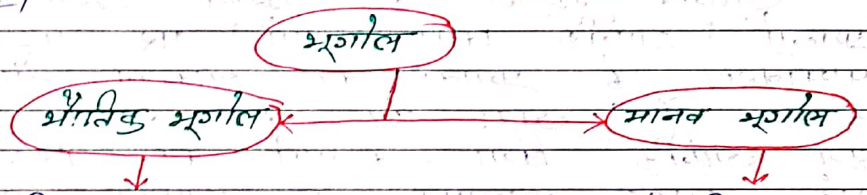

भौतिक भूगोल	मानव भूगोल
Rocks & Minerals	Population
Landforms	Settlements
Soils	Economic Activities
Animals	Transportation
Plants	Recreational Activities
Water	Religion
Atmosphere	Political Systems
Rivers & Other water bodies	Social Traditions
Environment	Human Migration
Climate & Weather	Agricultural System.

Meaning of Economic Geography

मानव भूगोल के अनेक उपशाखाओं में आर्थिक भूगोल एक प्रमुख शाखा है जिसके अन्तर्गत धरातल पर मानव की आर्थिक क्रियाओं की क्षेत्रीय विविधताओं, विशेषताओं, स्थानिक प्रतिरूपों तथा पारस्परिक संबंधों का अध्ययन किया जाता है। विश्व के विभिन्न भागों में मानव समुदाय अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भिन्न-भिन्न जीविकोपार्जन के साधनों (लकड़ी काटना, मछली पकड़ना, आखेट करना, कृषि करना, भोज्य पदार्थों का संग्रह करना, खान खोदना, उद्योग धंधे

चलाना, व्यापार करना, परिवहन करना और विभिन्न प्रतिष्ठानों में नौकरी आदि करना) में संलग्न रहता है। मानव के इन आर्थिक प्रयासों पर स्थलाकृति, भूमि की बनावट मिट्टी, जलवायु, वनस्पति, खनिज संसाधन भौगोलिक स्थिति, परिवहन की सुविधा आदि तत्वों पर प्रभाव पड़ता है।

"आर्थिक भूगोल का मुख्य उद्देश्य मानव प्रयत्नों (आर्थिक क्रिया कलापों) पर पड़ने वाले पर्यावरण के प्रभावों का आकलन और विश्लेषण करना है" अतः हम कह सकते हैं कि इन आर्थिक क्रिया-कलापों का विश्लेषणात्मक एवं क्रमबद्ध अध्ययन ही आर्थिक भूगोल कहलाता है।

पृथ्वी तल पर किन्हीं दो क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधन, स्थलाकृति, जलवायु, जनसंख्या मानव सभ्यता एवं संस्कृति का विकास, तकनीकी कुशलता आदि तत्वों में समानता नहीं होती है क्योंकि इनमें से प्रत्येक तत्व विभिन्न प्रक्रियाओं के प्रतिफल होते हैं और ये प्रक्रियाएं हर स्थान पर समान नहीं होती हैं परिणामस्वरूप मानव के आर्थिक क्रिया-कलाप एवं आर्थिक विकास के स्तर में क्षेत्रीय भिन्नता मिलना स्वभाविक है। यदि मानलिया जाए कि पृथ्वी तल पर किन्हीं दो प्रदेशों में उपर्युक्त तत्व एवं प्रक्रियाएं समान मात्रा एवं समान रूप से वितरित हैं तब भी उनका अन्तर्संबंध दोनों प्रदेशों में समानरूप का नहीं हो सकता है। अतः आर्थिक क्रियाओं के विविध स्वरूपों में क्षेत्रीय भिन्नता मिलती है और आर्थिक भूगोल में हम इन्हीं क्षेत्रीय भिन्नताओं का अध्ययन करते हैं।

Definitions of Economic Geography

Scanned with CamScanner

- R. E. Murphy - आर्थिक भूगोल मनुष्य के जीविकोपार्जन की विधियों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर मिलने वाली समानता एवं विषमता का अध्ययन करता है।

- Hartshorn & Alexander - आर्थिक भूगोल पृथ्वीतल की क्रियाओं की स्थानिक विभिन्नताओं का अध्ययन करता है जो उत्पादन विनिमय तथा वस्तुओं के उपभोग तथा सेवाओं से संबंधित हैं।

- John W. Alexander - आर्थिक भूगोल भूतल पर धन के उत्पादन, विनिमय एवं उपभोग से संबंधित मानव की आर्थिक क्रियाओं से उत्पन्न क्षेत्रीय विभिन्नताओं का अध्ययन करता है।

- N. G. Pound - आर्थिक भूगोल भूतल पर मानव की उत्पादक क्रियाओं के वितरण से सम्बंधित है। ये उत्पादक क्रियाएं - प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक हैं

- G. T. Renner - आर्थिक भूगोल मानव के आर्थिक क्रिया-कलापों के उपेक्षित पक्षों का अध्ययन है जो वस्तुओं, स्थानों और उनके उत्पादन की दशाओं परिवहन तथा उपयोग से सम्बंधित हैं।

अतः इनसे स्पष्ट होता है कि - "आर्थिक भूगोल मानव द्वारा भूतल के प्राकृतिक संसाधनों के विदोहन से संबंधित विज्ञान है, जिसमें उनके उत्पादन, परिवहन वितरण और उपभोग का अध्ययन किया जाता है।"

Nature of Economic Geography

आर्थिक भूगोल की प्रकृति मानव की आर्थिक क्रियाओं की क्षेत्रीय विभिन्नताओं तथा उनके स्थानिक

Scanned with CamScanner

वितरणों और संबंधों का अध्ययन करना होता है। पृथ्वी के धरातल पर विभिन्न प्रदेशों में निवास करने वाले मानव वर्गों की आर्थिक क्रियाएं भिन्न-भिन्न होती हैं और उनसे विभिन्न आर्थिक क्रियाएं जन्म लेती हैं और मानव वर्ग तथा भौगोलिक वातावरण के सहयोग से इन समस्याओं के समाधान हेतु प्रयास किये जाते हैं।

आर्थिक क्रियाओं पर भौतिक व सांस्कृतिक दोनों ही वातावरणों का प्रभाव पड़ता है, इसलिए मानव ने अपने अपने वातावरण का उपयोग कर अपने अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित कर आर्थिक क्रियाओं का विकास किया है। इस प्रकार के तथ्यों का अध्ययन करना ही आर्थिक भूगोल का स्वभाव है। आर्थिक भूगोल के द्वारा किसी देश के प्राकृतिक संसाधनों और मानवीय संसाधनों का सरलतापूर्वक मूल्यांकन हो सकता है जिससे देश के प्रादेशिक विकास एवं नियोजन का सुदृढ़ आधार मिल जाता है।

आर्थिक भूगोल के अध्ययन में हम तीन बातों का विशेष उल्लेख करते हैं।

i) <u>प्राकृतिक संसाधनों का मूल्यांकन एवं सर्वेक्षण</u> - इसमें किसी प्रदेश की स्थिति, उसकी जलवायु, जिसमें सूर्य से मिलने वाली ऊर्जा और साधन के रूप में उसका प्रयोग सम्मिलित करते हैं।

ii) <u>मानवीय संसाधन</u> - इसके अन्तर्गत जनसंख्या, उसका घनत्व, वृद्धि, वितरण, जनसंख्या की विशेषताएं नर नारी अनुपात, आयु वर्ग, साक्षरता, स्थानांतरण सामाजिक संगठन आदि का अध्ययन किया जाता है

iii) <u>आर्थिक क्रियाओं</u> - इसके अन्तर्गत हम क्षेत्रीय वितरण तथा आर्थिक घटनाएं का अध्ययन करते हैं।

Scanned with CamScanner